



जनपद प्रतापगढ़ के वित्तविहीन महाविद्यालयों के शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता : एक गुणात्मक अध्ययन

रमेश कुमार यादव

शोध छात्र शिक्षा विद्याशखा (शिक्षाशास्त्र)

उ.प.रा. टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज, भारत

Corresponding Email: rameshayush1980@gmail.com

Communicated : 20.06.2026

Revision : 20.07.2026

Accepted : 12.08.2026

Published: 30.09.2026

सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जनपद प्रतापगढ़ के वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना है। यह शोध कार्य गुणात्मक पद्धति पर आधारित है। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से न्यादर्श के लिए १२ शिक्षकों का चयन किया गया। चयनित शिक्षकों से अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से छह प्रमुख विषय (थीम) उभर कर सामने आए- संसाधन एवं संरचनात्मक अभाव, व्यावसायिक मान्यता का अभाव, प्रशासनिक दबाव, कार्य स्वायत्तता की कमी, आत्म प्रभावकारिता की वर्तमान स्थिति तथा आर्थिक असुरक्षा। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विषय विशेषज्ञता एवं अध्यापन कार्य के मध्य असंगति, तकनीकी एवं शैक्षणिक संसाधनों की कमी, प्रशासनिक दबाव तथा वेतनगत असमानता शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। वित्तविहीन महाविद्यालयों में शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता उच्च स्तर की हो इसके लिए संस्थागत सहयोग, नियमित व्यावसायिक प्रशिक्षण, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा न्यायसंगत पारिश्रमिक आवश्यक है।

प्रमुख शब्द : आत्म प्रभावकारिता, वित्तविहीन महाविद्यालय संस्थागत सहयोग, व्यावसायिक चुनौतियाँ, आर्थिक असुरक्षा।

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव एवं समाज के विकास की आधारशिला है। व्यक्ति एवं समाज दोनों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह शिक्षा हमें औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों तरीकों से प्राप्त होती है। शिक्षा की प्रक्रिया में औपचारिक शिक्षा का अपना विशेष महत्व है। इससे व्यक्ति एवं समाज का विकास सुसंगठित एवं सुनियोजित तरीके से होता है। सामान्यतः औपचारिक शिक्षा के दो स्तर हैं- विद्यालयी शिक्षा और उच्च शिक्षा। किसी भी देश के विकास में उच्च शिक्षा की विशेष भूमिका होती है। इस संदर्भ में **कोठारी आयोग (१९६४-६६)** का यह कथन आज भी प्रासंगिक है, कि **“भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में गढ़ा जा रहा है।”** कक्षाओं में इस भाग्य का निर्माता शिक्षक ही है। अतः शिक्षक किसी भी शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु होता है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों का कार्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि वे विद्यार्थियों को सिर्फ ज्ञान ही नहीं प्रदान करते बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नये ज्ञान का सृजन और उनके भविष्य के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक अनुसंधान करके शैक्षिक पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की भूमिका

बहुआयामी होती है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पिछले दो-तीन दशकों में वित्तविहीन महाविद्यालयों का विस्तार तेजी से हुआ है, जिससे शिक्षा की पहुँच तो बढ़ी है, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट देखी गई है। जिसका कारण है इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के सामने अनेक आर्थिक, व्यावसायिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ जो प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों की शिक्षण गुणवत्ता और आत्मविश्वास को प्रभावित करती है। शिक्षकों को अपने कार्य को सफलतापूर्वक करने के विश्वास का ही आत्म प्रभावकारिता कहा जाता है।

आत्म प्रभावकारिता का सिद्धांत सर्वप्रथम **बंडूरा (१९७७)**, द्वारा सामाजिक-अधिगम सिद्धांत के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया। बंडूरा के अनुसार आत्म प्रभावकारिता वह विश्वास है जिसके आधार पर व्यक्ति यह आकलन करता है कि वह किसी विशिष्ट कार्य को सफलतापूर्वक कर पाएगा या नहीं। शिक्षण अधिगम क्षेत्र में आत्म प्रभावकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गयी है। आत्म प्रभावकारिता शिक्षक के व्यवहार, कक्षा-नियंत्रण, शिक्षण रणनीतियों तथा विद्यार्थियों के साथ संबंधों को प्रभावित करती है। **जिस्ट और मिचेल (१९९२)**, के अनुसार, अधिक कार्य दबाव व्यक्ति की आत्म प्रभावकारिता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

चेनन मोरेन और वूल्फोल्क होय (२००१), ने शिक्षक आत्म प्रभावकारिता को शिक्षण की गुणवत्ता का प्रमुख मनोवैज्ञानिक निर्धारक बताया। लेकिन यह सदैव स्थिर नहीं रहता। **टार्टर और होय (२००४)**, ने अपने अध्ययन पाया कि जब शिक्षक को संस्था के निर्णयों में शामिल नहीं किया जाता या उसके योगदान को मान्यता नहीं मिलती, तो उसकी पेशेवर भूमिका कमजोर पड़ जाती है। इस प्रकार दोनों अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अत्यधिक कार्य दबाव और संस्थागत निर्णयों में शिक्षकों को शामिल न करना उनकी प्रभावकारिता को कमजोर करता है। **भावे (२०२०)**, ने वित्तविहीन शिक्षकों की आर्थिक और मानसिक चुनौतियों का अध्ययन किया। **भावे (२०२०)**, ने अपने अध्ययन में पाया कि ७२: से अधिक शिक्षकों ने कम वेतन तथा वेतन की अनियमितता और नौकरी असुरक्षा को सबसे बड़ी समस्या माना। जिसके कारण वे सदैव तनाव में रहते हैं। **वाराणसी और अन्य (२०२१)**, ने निम्न आय वाले विद्यालयों का अध्ययन किया, । उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि तकनीकी उपकरणों के प्रयोग के लिए शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिलता है। जिससे शिक्षकों में तकनीकी जटिलता का भाव पैदा होता है। अध्ययन के अनुसार तकनीकी संसाधनों के अभाव के कारण शिक्षकों के मन में अपनी क्षमता और आत्मविश्वास पर संदेह होने लगता है। एन०ई०पी० २०२० लागू होने के बावजूद भी डिजिटल कौशल पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसी प्रकार **सेथिल कुमार और अन्य (२०२२)**, ने कठोर प्रबंधन नीतियों एवं कम वेतन को शिक्षकों में बर्न आउट और निराशा का कारण माना। **एंटीनीनिकों (२०२४)**, ने भी वित्तीय प्रतिबद्धताओं को पूरा न कर पाना शिक्षकों की हताशा का मुख्य कारण पाया। इसके अतिरिक्त, प्रबंधन द्वारा स्वीकारता न मिलना और छुट्टियों की समस्या भी शिक्षकों के मानसिक स्तर को प्रभावित करती है। **कुमारी (२०२४)**, ने अपने अध्ययन में पाया कि एन०ई०पी० २०२० में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक पर जोर दिया गया है, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर फैकल्टी डेवलपमेंट तथा कार्यशालाओं का आयोजन जैसे कार्यक्रम नहीं होते हैं। परिणाम स्वरूप शिक्षकों की प्रभावशीलता कम हो जाती है। **कुमार और पाल (२०२४)**, ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि आनलाइन प्लेटफार्म, ई-लर्निंग और डिजिटल उपकरण की कमी के कारण शिक्षक आधुनिक शिक्षण-रणनीतियों को उपयोग करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते हैं। जिससे उनके आत्मविश्वास में कमी आती है।

वर्तमान में एन०ई०पी० २०२० के लागू होने के कारण शिक्षकों से डिजिटल अधिगम, बहु-विषयक शिक्षा तथा नवाचारी शिक्षण की अपेक्षा की जा रही है। ऐसे में यदि शिक्षक तकनीकी रूप से समर्थ न हों तो उनकी शिक्षण कार्यकुशलता प्रभावित हो सकती है। इसलिए, प्रतापगढ़ के वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

उपरोक्त अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि वित्तविहीन महाविद्यालयों की शिक्षकों की अनेक समस्याएँ हैं। अभी तक जितने अध्ययन हुए हैं वे सभी एक ही समस्या पर केन्द्रित रहे हैं। आत्म प्रभावकारिता अनेक संस्थागत, आर्थिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है। प्रतापगढ़ जिले के संदर्भ में इन सभी कारकों का शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता पर संयुक्त रूप से क्या प्रभाव पड़ता है। ऐसे गुणात्मक अध्ययनों का अभाव है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

विशेष रूप से वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में भी वे शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने का प्रयास करते हैं। आर्थिक असुरक्षा, अल्प वेतनमान, सीमित संसाधन, कार्यभार की अधिकता तथा जैसे अनेक कारक उनके आत्मविश्वास एवं कार्य की प्रभावशीलता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। ऐसे में उनकी आत्म प्रभावकारिता को प्रभावित करने वाले कारकों को जानना आवश्यक हो जाता है। आत्म प्रभावकारिता एक प्रकार की मानसिक धारणा है। जिससे शिक्षकों के मन में यह विश्वास होता है कि वे कक्षा-कक्ष प्रबंधन तथा विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावी ढंग से प्रभावित कर सकते हैं।

यह अध्ययन वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वास्तविक व्यावसायिक परिस्थितियों को सामने लाता है। इसके निष्कर्ष शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, संस्थागत सहयोग, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, संसाधन सुधार, तथा नीति निर्धारण के लिए उपयोगी दिशा प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार, अध्ययन उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षक कल्याण तथा संस्थागत उत्तरदायित्व तीनों के लिए महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य :

- वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता के स्तर को समझना।

- वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
- वित्तविहीन महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई व्यावसायिक चुनौतियों का गुणात्मक विश्लेषण करना।
- शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता बढ़ाने हेतु नीतिगत सुझाव देना।

शोध प्रश्न-:

- वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता का स्तर क्या है?
- कौन-कौन से कारक शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को प्रभावित करते हैं?
- शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए कौन-कौन से समाधान हो सकते हैं?

शोध पद्धति-:

शोध अभिकल्प-:

वर्तमान अध्ययन गुणात्मक शोध विधि पर आधारित है। इसमें घटनाक्रिया विज्ञान का अनुसरण किया गया है, क्योंकि इसका उद्देश्य वित्तविहीन महाविद्यालयों के शिक्षकों के अनुभवों और उनकी आत्म प्रभावकारिता की स्थिति को समझना है। अध्ययन में प्रतापगढ़ जिले के वित्तविहीन महाविद्यालयों से १२ शिक्षकों (छत्र १२) का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। चयन मानदण्ड यह रखा गया कि शिक्षक कम से कम ३ वर्ष तक वित्तविहीन महाविद्यालय में शिक्षण कार्य का अनुभव रखता हो। प्रस्तुत शोध में आकड़ों के संग्रहण के लिए षोडशकर्ता द्वारा निर्मित अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। आकड़ों के विश्लेषण में वर्जीनिया ब्राउन और विक्टोरिया क्लार्क (२००६) द्वारा विकसित विषयगत विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया।

जनसंख्या-:

यह अध्ययन जनपद प्रतापगढ़ के वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर केंद्रित है। ऐसे संस्थानों में जहाँ पर संसाधनों का अभाव, प्रशासनिक दबाव, शिक्षकों के वेतन में असमानता देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त तकनीकी अवरोध जैसी स्थितियाँ सामान्य रूप से इन वित्तविहीन महाविद्यालयों पाई जाती हैं, जो सीधे शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता तथा शिक्षण गुणवत्ता से जुड़ी रहती हैं।

न्यादर्श-:

अध्ययन के लिए प्रतिभागियों का चयन तीन संकायों- कला संकाय, विज्ञान संकाय और शिक्षक शिक्षा संकाय से किया गया। इन संकायों का उद्देश्य किसी प्रकार का

तुलना करना नहीं, बल्कि विभिन्न संकायों के शिक्षकों से प्राप्त अनुभवों को समग्र रूप से समझना है। अध्ययन में विभिन्न विषयों के १२ शिक्षकों के कथनों (ज_१ -ज_{१२}) का विश्लेषण किया गया। इन शिक्षकों ने अपनी कार्य स्थल चुनौतियों, विषय असंगति, प्रशिक्षण का अभाव, वेतन विषमता एवं प्रशासनिक दबाव से संबंधित अनुभवों को साझा किया।

प्रदत्त संतृप्ति का निर्धारण-:

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श की संख्या का निर्धारण प्रदत्त संतृप्ति के आधार पर किया गया है। साक्षात्कार के समय यह पाया गया कि दसवें प्रतिभागी के बाद कोई नया स्वतंत्र मुख्य विषय उभरकर सामने नहीं आया। ज_{१०} के कथन ने प्रशिक्षण अभाव के आत्म प्रभावकारिता पर प्रभाव को अधिक स्पष्ट किया। ज_{११} एवं ज_{१२} के कथनों ने क्रमशः संसाधन एवं संरचनात्मक अभाव तथा प्रशासनिक दबाव से संबंधित पूर्ववर्ती विषयों की पुनरावृत्ति की। इस प्रकार अंतिम तीन प्रतिभागियों के कथनों में विषयगत पुनरावृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दी। अतः छत्र १२ पर यह माना गया कि शोध के उद्देश्यों के लिए संतृप्त अकड़े प्राप्त हो गये हैं। जिसके बाद प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया रोक दी गई।

प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण-:

न्यादर्श के अंतर्गत चयनित शिक्षकों से आँकड़ों का संकलन अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से किया गया। साक्षात्कार के दौरान प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त अनुभवों एवं विचारों को लिखित रूप में संकलित किया गया। प्राप्त कथनों को विश्लेषण की दृष्टि से स्वतंत्र इकाइयों के रूप में ग्रहण किया गया तथा उनकी कोडिंग कर मुख्य विषयों में वर्गीकृत किया गया। साक्षात्कार प्रक्रिया के दौरान प्रतिभागियों की पूर्व सहमति प्राप्त की गई। प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखने के लिए उनके वास्तविक नामों के स्थान पर ज_१, ज_२, ज_३ आदि संकेतों का प्रयोग किया गया है।

तालिका २ से स्पष्ट है कि प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त किए गए प्राथमिक कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर अर्थपूर्ण इकाइयों की पहचान की गई। तत्पश्चात इन अर्थपूर्ण इकाइयों को समानता अथवा विषयगत निकटता के आधार पर कोड प्रदान किए गए। समान प्रकृति वाले कोडों को मिलाकर छः मुख्य विषय निर्धारित किए गए। जो कि इस प्रकार हैं-

- संसाधन एवं संरचनात्मक अभाव
- प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक दक्षता का अभाव
- प्रशासनिक दबाव एवं कार्य स्वायत्तता का अभाव
- व्यावसायिक मान्यता एवं प्रशंसा का अभाव
- आत्म प्रभावकारिता की स्थिति

● आर्थिक असुरक्षा एवं वेतन असमानता

मुख्य विषय के आधार पर परिणामों का विप्लव एवं व्याख्या:-

संसाधन एवं संरचनात्मक अभाव (प्रतिनिधि कथन: T₁; T₂; T₇; T₁₁)

आकड़ों से स्पष्ट होता है कि वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अनेक प्रकार की शैक्षिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। विषय का भार, तकनीकी कौशल में कमी, संसाधनों का अभाव तथा मार्गदर्शन की अपर्याप्तता शिक्षण कार्य को प्रभावित करती है। कई शिक्षक बताते हैं कि उन्हें विषय के अनुरूप कक्षाएँ नहीं दी जाती है। स्मार्ट क्लास, डिजिटल उपकरण तथा प्रयोगशाला सामग्री उपलब्ध नहीं होती। संसाधनहीन वातावरण में कार्य करते हुए शिक्षक शिक्षण की गुणवत्ता बनाए रखने में कठिनाई अनुभव करते हैं। यह स्थिति उनकी कार्य संतुष्टि एवं आत्मविश्वास दोनों को प्रभावित करती है।

जैसा कि एक प्रतिभागी (T₁) ने अपनी विवशता व्यक्त की “सामग्री न होने से कक्षा-कक्ष का संचालन अच्छे से नहीं कर पाता हूँ। मुझे विज्ञान पढ़ाना चाहिए, पर कला विषयों की जिम्मेदारी भी दे दी जाती है।”

यह स्थिति **वाराणसी और अन्य (२०२१)** के अध्ययन से मेल खाती है, जिसमें पाया गया था कि तकनीकी संसाधनों और उचित उपकरणों के अभाव में शिक्षकों के भीतर तकनीकी जटिलता और अक्षमता का भाव पैदा होता है। जब शिक्षकों को स्मार्ट क्लास या प्रयोगशाला जैसी सुविधाएँ नहीं मिलती (ज_२), तो उनकी विषय निपुणता कमजोर पड़ जाती है, जो सीधे उनकी आत्म प्रभावकारिता को घटाती है।

प्रशिक्षण एवं व्यासायिक दक्षता का अभाव (प्रतिनिधि कथन: T₃; T₁₀)

शिक्षकों ने प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी साधनों का अभाव तथा प्रशासनिक उपेक्षाओं के चलते आत्म प्रभावकारिता में कमी होने की बात कही। उचित प्रशिक्षण न मिलने से शिक्षण कौशल का विकास नहीं पाता और तकनीकी संसाधनों का अभाव शिक्षण प्रक्रिया को आधुनिक बनाने में बाधा पैदा करती है।

इसी को व्यक्त करते हुए प्रतिभागी (ज_३ और ज_{१०}) ने साझा किया कि “विद्यार्थियों को नए तरीके से पढ़ाने के लिए हमें कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। तकनीकी ज्ञान के अभाव में मुझे कक्षा में आत्मविश्वास की कमी महसूस होती है।”

बंडूरा (१९७७) के सिद्धांत के अनुसार, ‘सफल अनुभव’ आत्म-प्रभावकारिता का सबसे बड़ा स्रोत है। प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षक असफलता या कठिनाई का अनुभव

करते हैं, जिससे उनका मनोबल गिरता है। **कुमार और पाल (२०२४)** ने भी पाया कि डिजिटल उपकरणों की कमी और प्रशिक्षण का अभाव शिक्षकों को आधुनिक रणनीतियों के उपयोग से रोकता है।

प्रशासनिक दबाव एवं कार्य स्वायत्तता का अभाव (प्रतिनिधि कथन: T₄; T₁₂)

प्राप्त आकड़ों से विद्यालयी प्रशासन द्वारा अपेक्षित सहयोग की कमी सामने आई। शिक्षकों ने बताया कि प्रशासनिक कार्य, गैर-शैक्षणिक जिम्मेदारियाँ के कारण शिक्षण का समय कम हो जाता है। कई बार निरीक्षण कार्य, डेटा एंट्री आदि कार्य शिक्षण से अधिक महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।

स्वायत्तता की कमी को उजागर करते हुए प्रतिभागी (T₄ और T₁₂) ने कहा “शिक्षण के अतिरिक्त लिपिकीय कार्य करने का इतना दबाव रहता है कि पढ़ाने और कक्षा की तैयारी का समय ही नहीं मिलता। प्रशासनिक तानाशाही के कारण हम खुलकर काम नहीं कर पाते।”

जिस्ट और मिचेल (१९९२) ने अपने अध्ययन में पाया कि अत्यधिक कार्यभार और भूमिका संघर्ष आत्म प्रभावकारिता को कम करने वाले प्रमुख कारक हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भी यह स्पष्ट हुआ कि ‘प्रशासनिक दबाव’ शिक्षकों में तनाव उत्पन्न करता है। जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

व्यावसायिक मान्यता का अभाव (प्रतिनिधि कथन: T₅, T₆)

कुछ प्रतिभागियों ने बताया कि महाविद्यालय में कला विषय के शिक्षकों को कम महत्व मिलता है। विषय आधारित भेदभाव के कारण व्यावसायिक पहचान को चुनौती मिलती है। इससे शिक्षक अपने कार्य को कम मूल्यवान समझने लगते हैं, जिससे उनकी प्रेरणा में कमी आती है। वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को समाज में भी मान्यता नहीं मिलती तथा शिक्षक बताने में भी आत्मग्लानि होती है।

एक शिक्षक (ज_६) ने बताया “हम विद्यार्थियों के भविष्य के लिए मेहनत करते हैं, पर सराहना बहुत कम मिलती है। हमारे विचारों और सुझावों को निर्णयों में शामिल ही नहीं किया जाता।”

यह **टार्टर और होय (२००४)** के उस सिद्धांत की पुष्टि करता है कि जब शिक्षकों को संस्थागत निर्णयों में शामिल नहीं किया जाता या उनके योगदान को मान्यता नहीं मिलती, तो उनकी व्यावसायिक भूमिका कमजोर पड़ जाती है। सम्मान की यह कमी शिक्षकों के आत्मसम्मान को चोट पहुँचाती है, जिसकी परिणित उनके कक्षा प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

आत्म प्रभावकारिता की स्थिति (प्रतिनिधि कथन: T₁₀)
कुछ कथनों में यह पाया भी गया कि शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य के लिए काम करते हैं इसके बावजूद उन्हें समाज में भी अपेक्षित मान्यता प्राप्त नहीं होती, जिसके परिणामस्वरूप आत्मविश्वास और आत्म प्रभावकारिता में कमी आती है।

इसी मनोदशा को अभिव्यक्त करते हुए एक शिक्षक ने कहा “कंप्यूटर, प्रोजेक्टर और डिजिटल बोर्ड का उपयोग करने में हिचकिचाहट होती है। जब सामग्री नहीं मिलती, तो मनोबल भी कम हो जाता है।”

यह स्थिति दर्शाती है कि आत्म प्रभावकारिता केवल आंतरिक विश्वास नहीं है, बल्कि यह बाहरी वातावरण पर भी निर्भर करती है। जैसा कि **एंटोनीनिको और दुरई (२०२४)** ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया, यदि प्रबंधन द्वारा उचित काउंसलिंग और सहयोग मिले, तो इस मानसिक स्थिति में सुधार संभव है, जिसका कि वर्तमान में अभाव है।

आर्थिक असुरक्षा एवं वेतन असमानता (प्रतिनिधि कथन: T₈; T₉)

शिक्षकों ने आर्थिक असुरक्षा, वेतन भेदभाव तथा असमान अवसरों को प्रमुख व्यावसायिक चुनौती के रूप में चिन्हित किया। पारिश्रम के अनुरूप वेतन न मिलना तथा विषय-आधारित भेदभाव उनके व्यावसायिक विकास को प्रभावित करता है। इससे कार्य संतोष में कमी और भविष्य को लेकर अनिश्चितता पैदा होती है।

एक शिक्षक (ज_c) इसको इस तरह से व्यक्त करता है “मांगे गए परिणामों को प्राप्त करने पर भी आर्थिक सुरक्षा नहीं है। स्थायी नियुक्ति न होने से हमेशा चिंता बनी रहती है और आर्थिक दबाव के कारण शिक्षण पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते।”

यह कथन **भावे (२०२०) और सेंथिल कुमार (२०२२)** के अध्ययनों के अनुरूप है, जहाँ पाया गया था कि ७२: से अधिक शिक्षक वेतन की अनियमितता और नौकरी की असुरक्षा से ग्रस्त हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वित्तविहीन महाविद्यालयों के शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता केवल व्यक्तिगत क्षमता का विषय नहीं है। आर्थिक स्थिरता, संसाधन उपलब्धता, विषय अनुकूल शिक्षण, कार्यभार संतुलन और तकनीकी कौशल जैसे कारकों पर निर्भर करती है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन पूर्व उपलब्ध साहित्य से समानता रखता है।

मुख्य निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रतापगढ़ जनपद के वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अनेक प्रकार की संरचनात्मक, व्यावसायिक तथा आर्थिक

चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। जिनका उनकी आत्म प्रभावकारिता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विषय असंगति, तकनीकी संसाधनों का अभाव, प्रशिक्षण की कमी, गैर शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यभार, व्यावसायिक मान्यता का कमी, आर्थिक असुरक्षा तथा वेतनगत असमानता जैसे कारक शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि वित्तविहीन महाविद्यालयों में शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता का स्तर एकसमान नहीं है। यह उपलब्ध संसाधनों, संस्थागत सहयोग, कार्य स्वायत्तता, प्रशिक्षण तथा आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि इन संस्थानों में आत्म प्रभावकारिता का स्तर मध्यम से निम्न स्तर का है। ऐसा तब है, जब शिक्षक स्वयं को संसाधन विहीन और आर्थिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं।

अतः वित्तविहीन महाविद्यालयों में शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को सुदृढ़ करने के लिए संस्थागत स्तर पर सतत् व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशासनिक कार्यभार का संतुलन, कार्य स्वायत्तता, व्यावसायिक मान्यता तथा न्यायसंगत पारिश्रमिक सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव:-

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि, वित्तविहीन महाविद्यालयों में शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को सुदृढ़ करने के लिए संस्थागत स्तर पर सुनियोजित प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। महाविद्यालयों में विषयानुकूल शिक्षण कार्य का वितरण तथा शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, पैंक्षिक तकनीकी संसाधनों के उपयोग एवं परामर्श संबंधी नियमित प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए। इससे उनकी व्यावसायिक दक्षता एवं शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होगी। इसके साथ पैंक्षिक संसाधनों की उपलब्धता तथा शिक्षण अनुकूल वातावरण का निर्माण भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों पर प्रशासनिक एवं शिक्षणोत्तर कार्यभार को कम किया जाना चाहिए। जिससे कि वे शैक्षणिक दायित्वों पर अधिक ध्यान दे सकें। उनके कार्य का संस्थागत स्तर पर निष्पक्ष मूल्यांकन एवं मान्यता सुनिश्चित की जानी चाहिए। जिससे व्यावसाय के प्रति संतोष और आत्म प्रेरणा विकसित हो। वित्तविहीन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए आर्थिक सुरक्षा, न्यायसंगत पारिश्रमिक तथा वेतन असमानताओं के निराकरण हेतु नीतिगत पहल भी आवश्यक है। इस प्रकार, व्यावसायिक प्रशिक्षण, संसाधनों

की उपलब्धता और आर्थिक सुरक्षा जैसे समेकित प्रयास शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

अध्ययन की सीमाएँ :

यह अध्ययन प्रतापगढ़ जनपद के वित्तविहीन महाविद्यालयों तक सीमित है। अध्ययन में १२ शिक्षकों का उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन किया गया, जो गुणात्मक शोध के लिए उपयुक्त है। किन्तु व्यापक प्रतिनिधित्व का दावा नहीं करता। अध्ययन के निष्कर्ष प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं। अतः इसका सामान्यीकरण सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- एंटोनीनिको, आई., एवं दुरई, एफ. आर. ए. (२०२४), स्ट्रेन्थेनिंग वर्क लाइफ बैलेंस ऑफ सेल्फ फाइनेंसिंग स्कूल टीचर्स, सलूद, सिएन्सिया व टेक्नोलोजिया - सेरी दे कॉन्फेरेंसियास, ३, ११६६।
- कुमार, पी., एवं पाल, वाई. (२०२४), डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता का अध्ययन: एक विषय-वस्तु विश्लेषण। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, ५(५), १८६६-१८७२।
- कुमारी, एम. (२०२४), उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के क्रियान्वयन की चुनौतियाँ और संभावनाएँ: एक शिक्षक शिक्षाविद् का दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, १२(२), ८५७९-८५८५।
- चेनन मोरैन, एम., एवं वूल्फोल्क होय, ए. (२००१), टीचर एफिकेसी: कैप्चरिंग एन एलूसिव कंस्ट्रक्ट, टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, १७(७), ७८३-८०५।
- जिस्ट, एम. ई., एवं मिशेल, टी. आर. (१९९२), सेल्फ-एफिकेसी: ए थियोरेटिकल एनालिसिस ऑफ इट्स डिटरमिनेंट्स एंड मैलिबिलिटी। अकादमी ऑफ मैनेजमेंट रिव्यू, १७(२), १८३-२११।
- टार्टर, सी. जे., एवं होय, डब्ल्यू. के. (२००४), ए सिस्टम्स अप्रोच टू क्वालिटी इन एलीमेंट्री स्कूल्स: ए थियोरेटिकल एंड एम्पिरिकल एनालिसिस। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, ४२(३), ३०१-३२२।
- बंडूरा, ए. (१९७७), सेल्फ-एफिकेसी: टुवर्ड ए यूनिफाइंग थ्योरी ऑफ बिहेवियरल चेंज, साइकोलॉजिकल रिव्यू, ८४(२), १९१-२१५।
- ब्रौन, वी., एवं क्लार्क, वी. (२००६), यूजिंग थीमेटिक एनालिसिस इन साइकोलॉजी। क्वालिटेटिव रिसर्च इन साइकोलॉजी, ३(२), ७७-१०१।
- भावे, बी. (२०२०), ए स्टडी ऑफ प्रॉब्लम्स ऑफ टीचर एजुकेटर्स इन सेल्फ फाइनेंस कॉलेज उच्चरिंग कोविड-१९ पैडेमिक सिचुएशन। एजुकेशनल क्वेस्ट: एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड अप्लाइड सोशल साइंस, ११(२), ५९-६२।
- वाराणसी, आर. ए., वशिष्ठा, ए., किजिलसेक, आर. एफ., एवं डेल, एन. (२०२१), इन्वेस्टिगेटिंग टेक्नोस्ट्रेस अमंग टीचर्स इन लो-इनकम इंडियन स्कूल्स। प्रोसीडिंग्स ऑफ ए०सी०म० ह्यूमन-कम्प्यूटर इंटरैक्शन, ५, आर्टिकल ३४०।
- शिक्षा मंत्रालय (१९६६), शिक्षा आयोग (१९६४-६६) का प्रतिवेदन: शिक्षा और राष्ट्रीय विकास भारत सरकार।
- सेथिलकुमार, एम. जे., एवं अन्य. (२०२२), ए स्टडी ऑन बर्नआउट अमंग सेल्फ फाइनेंसिंग कॉलेज टीचर्स विद स्पेशल रिफरेंस टू विरुधुनगर डिस्ट्रिक्ट। जर्नल ऑफ पॉजिटिव स्कूल साइकोलॉजी, ६(५), २२६५-२२७४।